एक नया दृष्टिकोण

सीखने में संवृद्धि के लिए

ई.एस.रामामूर्ति



शासकीय स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा की हालत समय–समय पर एनुअल सर्वे ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट्स (ASER) में नियमित तौर पर उजागर होती रहती है। इनमें निकलकर आए कुछ तथ्य सच में चिन्ताजनक हैं – उदाहरण के लिए, कर्नाटक में कक्षा सात के 27 प्रतिशत विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक से बाहर की सामान्य विषयवस्तु को अपनी ही भाषा में प्रवाह के साथ नहीं पढ़ पाते। इससे भी अधिक चिन्ता की बात है कि दक्षता सम्बन्धी इस तरह की कमियाँ को अगर इसी समय सम्बोधित नहीं किया जाता तो वे जीवन भर यूँ की यूँ बनी रहेंगी। शिक्षणा के माध्यम से सुनिश्चित करने की कोशिश हुई कि कोई भी विद्यार्थी पढ़ने, लिखने और अपनी भाषा में अभिव्यक्ति की तीन बुनियादी दक्षताएँ हासिल किए बिना प्राथमिक स्कूली शिक्षा न छोड़े। इसी के एक हिस्से के तौर पर शिक्षणा ने प्रवाह के साथ पढ़ने पर सबसे पहले ध्यान केन्द्रित किया। शिक्षणा एक नवाचारी दृष्टिकोण का प्रयोग करते हुए इस उद्देश्य की प्राप्ति के समीप आया। और यही इस लेख के केन्द्र में है। यह इस वजह से और भी अधिक दिलचस्प हो जाता है कि इसे एक अलग वातावरण में आसानी से लागू किया जा सकता है और प्राथमिक स्कूली शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है।

शिक्षणा को इस बात का एहसास था कि ASER द्वारा रिपोर्ट की गई कमियाँ इस बात के बावजूद हैं कि शासकीय स्कूलों में शिक्षक हमेशा ही अपनी योग्यताओं और अनुभव के सन्दर्भ में इन कमियों का सामना करने के लिए अच्छे से लैस हैं। इन कमियों को विद्यार्थियों की अन्तर्निहित क्षमताओं और बुद्धि से जोड़कर भी नहीं देखा जा सकता क्योंकि कुछेक को छोड़कर उनमें से अधिकतर इतने लायक तो पाए ही जाते हैं कि इस खाते में असफल न हों।

आमतौर पर माना जाता है कि सीखने के दो रास्ते होते हैं – शिक्षण के माध्यम से ज्ञानार्जन और अभ्यास के माध्यम से एक दक्षता हासिल करना या उसे सुदृढ़ करना। इनमें से प्रथम तो शिक्षक के कार्यक्षेत्र में आता है, और दूसरा विद्यार्थी द्वारा की गई मेहनत पर निर्भर करता है। महसूस किया गया कि पढ़ने में रवानी हासिल करना दूसरी तरह की गतिविधि है और उसे इस बात को ध्यान में रखते हुए ही किया जाना चाहिए। इस दक्षता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शिक्षणा ने चुने गए कुछ स्कूलों के कन्नड़ शिक्षकों से सवाल–जवाब किए और इस बात की व्यावहारिकता के बारे में पता लगाने की कोशिश की कि क्या विद्यार्थी यह दक्षता एक तर्कसम्मत समय में हासिल कर सकते हैं? अगला कदम एक ऐसे व्यवस्थित प्रोग्राम को विकसित

[i] http://www.sikshana.org

करने का था, जिससे सुनिश्चित हो पाए कि विद्यार्थी प्रामाणिक आधार पर आवश्यक मेहनत कर पाएँ। इस प्रकार निम्नलिखित प्रक्रिया निकल कर आई –

शुरू में बच्चों को सशक्त सन्देश दिया गया कि कन्नड़ पढ़ना सीखने का यह उनके लिए अन्तिम मौका होगा क्योंकि इसके बाद स्कूली शिक्षा के दौरान उन्हें इस प्रकार के हस्तक्षेप की आशा नहीं रखनी चाहिए। लेकिन यदि वे कुछ समय के लिए स्वयं को इसके लिए प्रतिबद्ध करने को तैयार हों, तो वे यह महत्त्वपूर्ण जीवन–कौशल इस चरण में भी हासिल कर सकते हैं, जबकि इतने सालों की स्कूली शिक्षा के बावजूद यह उन्हें नहीं मिल पाया।

अभ्यास के सत्र, जब कभी भी सम्भव हो पाया, स्कूल–परिसर में ही चलाए गए। ये सत्र एक–एक घण्टे के थे और सप्ताह में छह दिन पाँच सप्ताह के लिए किए गए। बीच में किसी भी आधार पर किसी भी छुट्टी की अनुमति नहीं दी गई। समय और स्थान में भी बदलाव की अनुमति नहीं दी गई। पूरी व्यवस्था कड़े अनुशासन के तहत की गई और यही सफलता की कुंजी भी है।

इस व्यवस्था के तहत अपने साथ के बच्चों/समकक्षों की सहायता से सीखना किया जाता है न कि 'शिक्षक' से। वास्तव में तो इन सत्रों के दौरान परम्परागत अर्थ में कोई शिक्षण नहीं किया जाता। यह जानी–मानी बात है कि बच्चों को अपने समकक्षों के साथ किसी दक्षता का अभ्यास करना अच्छा लगता है; यह भी एक स्वीकार किया गया तथ्य है कि सीखना एक ऐसे सहायक तन्त्र के तहत बेहतर और अधिक प्रभावशाली होता है जहाँ किसी तरह का भय न हो। ये बातें प्रस्तावित सत्रों के आधार का काम करती हैं। सत्र इस प्रकार व्यवस्थित होते हैं –

सीखने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को एक अन्य ऐसे विद्यार्थी के साथ रखा जाता है जिसके पास पहले से ही वह दक्षता हो। एक साझा सहायक 15–20 विद्यार्थी जोड़ों पर निगरानी रखता है। प्रत्येक जोड़े को एक–सी उपयुक्त स्तर की पठन सामग्री दे दी जाती है। शिक्षार्थी से कहा जाता है कि वह इस सामग्री को पढ़ने की कोशिश करे। जहाँ कहीं भी वह रुकता है, मार्गदर्शक विद्यार्थी से आशा की जाती है कि वह उस शब्द को ऊँची ध्वनि में पढ़े। यह हस्तक्षेप शिक्षार्थी द्वारा किए गए पढ़ने के प्रयास के बाद होना चाहिए और अगर वह पढ़ न पाए तो इसमें उसके बाद 2/3 सेकेण्ड से अधिक देरी नहीं होनी चाहिए। समय में दी गई छूट यह सुनिश्चित करने के लिए दी जाती है कि शिक्षार्थी बार–बार असफल हो जाने से निराश न हो जाए और पठन की नियमित गति बनी रहे। सम्पूर्ण प्रक्रिया में तीन कदम शामिल होते हैं – पढ़ने का प्रयास, असफल हो जाने की हालत में सही शब्द का सुनना, और 'दृष्टिगत' अवलोकन के साथ अब उसे सही तरह से पढ़ना। इस प्रकार शिक्षार्थी इनके बीच की सम्बद्धता को मन में ला पाता है और निश्चित है कि यह कुछ देर के लिए तो रहेगी। यदि अभ्यास के सत्र बीच–बीच में होते रहते हैं तो मुश्किल शब्द इस हद तक बार–बार सामने आएँगे कि वे शिक्षार्थी के मन–मस्तिष्क में पक्के तौर पर अंकित हो जाएँ।

हमारी जाँच–पड़ताल से सामने आया कि बच्चे एक वयस्क की उपस्थिति में सुरक्षित और प्रेरित महसूस करते हैं, फिर वह चाहे एक प्रशिक्षित शिक्षक न भी हो। इसीलिए सत्रों के दौरान ऊपर दिए गए दिशा–निर्देशों का लागू होना सुनिश्चित कर पाने के लिए एक सहायक मुहैया रहता/रहती है। लेकिन उसके द्वारा प्रक्रिया में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, विशेष तौर से एक शिक्षक की भूमिका में।

इस कार्य की अपेक्षित सफलता असल में बोधात्मक दक्षताओं की बजाए दृढ़ निश्चय, हिम्मत और कोशिश में जुटे रहने जैसी दक्षताओं के इर्द–गिर्द होती है। एक बार बच्चा स्वयं को ऊपर चर्चा में आई व्यवस्था के हवाले कर देता है तो उसका झुकाव सफलता की ओर होने लगता है; बाकी काम ऊपर बताए गए अभ्यास द्वारा कर दिया जाता है।

इन पूर्व धारणाओं को परीक्षण की कसौटी पर उतारने के लिए एक स्कूल में 13 विद्यार्थियों के साथ उदाहरणस्वरूप काम किया गया। ये वे बच्चे थे जिन्हें हम 'वंचित' बच्चे कह सकते हैं जिनमें दक्षताओं की कमी तो थी ही, साथ ही ये ऐसे बच्चे थे जो अकसर कक्षा में नहीं आते थे और सीखने–सिखाने में जिनकी कोई विशेष दिलचस्पी दिखाई नहीं देती थी। संक्षिप्त निर्देश दिए जाने के बाद 31 अगस्त से 5 अक्तूबर तक लगातार एक 30 दिन का कैम्प लगाया गया। इसी अवधि में तीन बड़े त्यौहारों की छुट्टियाँ भी आईं। बच्चों ने इतवारों को भी उपस्थित रहना तय किया जिस से यह 35 दिन का प्रोग्राम बन गया। यह 100 प्रतिशत उपस्थिति के साथ चला। बच्चे अप्रत्याशित जोश



दिखा रहे थे। पूरे प्रोग्राम के दौरान सक्षमता के उनके निरन्तर बढ़ते स्तर पर गर्व महसूस कर रहे थे। तयशुदा अवधि के अन्त पर उनमें से 10 ने ASER के तहत परिभाषित स्तर–2 की पठन–क्षमता हासिल कर ली, 2 अन्य ने और दो सप्ताह में यही क्षमता हासिल कर ली और पिछड़ने वाला बस एक ही बच्चा रह गया। 13 में से 12 की सफलता–दर ने हमें अक्तूबर/नवम्बर में 43 स्कूलों के साथ दूसरा दौर भी चलाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस बार भी, बावजूद इसके कि पूरी प्रक्रिया सत्र के बीच की छुट्टियों में और तीन बड़े त्यौहारों के दौरान हुई, सभी केन्द्रों में उपस्थिति लगभग पूरी थी। 506 बच्चों ने भाग लिया जिनमें से 327 ने 65 प्रतिशत तक कार्यकुशलता से निर्धारित दक्षता हासिल कर ली। यह पहले प्रयोग में हासिल सफलता से कम था लेकिन फिर भी यह आँकड़ा शिक्षणा द्वारा प्राप्त 8 प्रतिशत छटनी दर के उस आँकड़े से महत्त्वपूर्ण तौर पर बेहतर था जो 2011–12 में 136 स्कूलों से 3789 बच्चों के साथ परम्परागत दृष्टिकोण के तहत हासिल हुआ था।

2012–13 के बाकी के समय में शिक्षणा के 220 से अधिक स्कूलों में कक्षा सात के बच्चों के लिए इस प्रोग्राम को कुछ परिवर्तनों के साथ आगे ले जाया गया। जो विद्यार्थी 30 दिनों के अन्त पर रवानी के मामले में कुछ पीछे रह गए लगते थे, उन्हें 15 दिन का अतिरिक्त समय दिया गया। इसके अलावा, जिनके पास वर्णमाला/शब्दों का न्यूनतम ज्ञान भी नहीं था, उन्हें शुरुआत में ही निकाल लिया गया और 30 दिन के योग्यता–कार्यक्रम को पूरा करने के लिए डाला गया – इसका ढाँचा मुख्य कार्यक्रम जैसा ही था और मकसद भी वांछित दक्षता को हासिल करना था। इस चरण में 7894 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से 7166 यानी 90.8 प्रतिशत कार्यकुशलता के निर्धारित स्तरों को हासिल कर पाए। यदि पहले से दक्षता प्राप्त कर चुके या अपनी अन्य पहलकदमियों के तहत हासिल करने वालों की संख्या एक साथ ली जाए तो शिक्षणा स्कूलों ने 96.9 प्रतिशत का आँकड़ा हासिल किया – यानी 18,471 में से 17904 विद्यार्थियों ने पठन से सम्बद्ध ASER के स्तर–2 की कसौटी को पास कर लिया। वैधता की इस भरपूर सफलता के आधार पर वर्तमान अकादमिक साल में कार्यक्रम को और फैलाते हुए शिक्षणा स्कूलों में इसे कक्षा सात के सब बच्चों के साथ किया जा रहा है।

कुछ बातें ध्यान में रखने लायक हैं। ASER मूल्यांकन के तहत प्रवाह के साथ पढ़ने की उपलब्धि से ही यह अर्थ नहीं निकलता कि पढ़े गए को समझ भी लिया गया है। लेकिन यह किसी भी समग्र पठन प्रोग्राम का अन्तिम लक्ष्य होता है। लेकिन पढ़ने में रवानी का होना इसके लिए एक पूर्व शर्त है और इसलिए इस दक्षता का ग्रहण किया जाना इस लक्ष्य की प्राप्ति की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम है – इस तथ्य को रिपोर्ट में पहचाना गया है।

संयोगवश शिक्षणा ने गणित में पूर्ण संख्याओं की सामान्य भाग कर पाने की दक्षता हासिल करने का बिल्कुल ऐसा ही एक और प्रोग्राम कई स्कूलों में चलाया था। यहाँ पर प्राप्त सफलता–दर पठन–प्रोग्राम में हासिल दर जैसी ही थी। इससे प्रकट होता है कि केवल पठन की लक्षित दक्षता ही महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह तो नियन्त्रित हालात में ज्ञानार्जन के स्तरों में संवर्द्धन के लिए बोधात्मक दक्षताओं से इतर दक्षताओं की भूमिका की बात है। इस प्रोग्राम की सफलता और सीखने की कुछ विशेष प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में उससे मिलने वाली अन्तर्दृष्टि से यह आशा बनती है कि उसका प्रयोग प्राथमिक स्कूली शिक्षा में कई तरह की दक्षताओं को हासिल करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

ई.एस.रामामूर्ति उद्योग के क्षेत्र में लम्बे समय तक कार्यरत रहे हैं और प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं। इस क्षेत्र में अपने कार्य के चरम पर पहुँचने के बावजूद उन्होंने इससे निकलकर शिक्षणा की स्थापना की, जिसके वे मुख्य पथप्रदर्शक हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य शासकीय स्कूली व्यवस्था के लिए एक निरन्तर पोषणीय, टिकाऊ मॉडल विकसित करना है। उनसे esrmurthy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवादः रमणीक मोहन

